विषय-सूची

क्रम नं. विषय	पृष्ठ	क्रम नं. विषय	पृष्ठ
१ धवलाकारका मंगला चरण	१	२६ संज्वलन मान और मायाके बंध-	
२ बंध-स्वामित्व विचयका दो प्रकारसे निर्देश	१ ३	स्वामित्व आदिका विचार	५५
बंध-स्वामित्व-विचयका अवतार	२ ४ बंध	२७ संज्वलन लोभके बंधस्वामित्व	
व मोक्षका स्वरुप	३	आदिका विचार	५८
५ बंध-स्वामित्व-विचयका निरु-क्त्यर्थ		२८ हास्य, रति, भय और जुगुप्साके	
	३	बंधस्वामित्व आदिका विचार	५९
६ ओघसे बंध-स्वामित्व-विचयके		२९ मनुष्यायुके बंधस्वामित्व आदिका विचार	६१
चौदह जीवसमासोंका निर्देश	४	३० देवायुके बंधस्वामित्व आदिका विचार	६४
७ चौदह गुणस्थानोंमें प्रकृतिबंध		३१ देवगति आदि सत्ताईस प्रकृति-	
व्युच्छेदकी प्रतिज्ञा	५	योंके बंधस्वार्वित्व आविका विचार	६६
८ व्युच्छेदके भेद और उनका निरुक्त्यर्थ	५	३२ आहारकशरीर और आहारक-	
᳡ओघकी अपेक्षा बंधस्वामित्व	७-९२	शरीरांगोपांगके बंधस्वामित्व	
९ पांच ज्ञानावरणीय आदिके		आदिका विचार	७१
बंधकोंकी प्ररुपणामें तेईस		३३ तीर्थकर प्रकृतिके बंधस्वामित्व	
प्रश्नोंका उद्‌भावन	७	आदिका विचार	७३
१० प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति	९	३४ तीर्थकर प्रकृतिके विशेष कारणोंकी	
११ प्रकृतियोंके बंधोदयकी पूर्वा परता	११	आशंका	७६
१२ पांच ज्ञानावरणीयादिकोंके बंधके		३५ तीर्थकर प्रकृतिके बंधके सोलह	
स्वामी व उसके व्युच्छेदस्थानकी प्ररुपणा		कारणोंकी प्ररुपणा	७८
करते हुए उन तेईस प्रश्नोंका उत्तर	१२	३६ तीर्थकर प्रकृतिके उदयका माहात्मय	९२
१३ सान्तर, निरन्तर और सान्तर-		᳡आदेशकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व गतिमार्गणा	९३-३९८
निरन्तर रुपसे बंधनेवाली		३७ नरकगतिमें ज्ञानावरणीय आदिके	
प्रकृतियोंका निर्देश	१६	बंधस्वामित्वका विचार	९३
१४ ध्रुवबंधी प्रकृतियोंका निर्देश	१७	३८ निद्रानिद्राके बंधस्वामित्वका विचार	९८
१५ निरन्तरबंध और ध्रुवबंधमें विशेषता	१७	३९ मिथ्यात्व आदिके बंधस्वामित्वका विचार	१०१
१६ मूल और उत्तर प्रत्ययोंकी विस्तृत		४० मनुष्यायुके बंधस्वामित्वका विचार	१०२
प्ररुपणा	१९	४१ तीर्थकर प्रकृतिके बंधस्वामित्वका विचार	१०३
१७ गतिसंयोगादिविषयक प्रश्नोंका उत्तर	२८	४२ प्रथम तीन पृथिवियोंमें बंध-	

१८ निद्रानिद्रादिक पच्चीस प्रकृ-तियोंके बंधस्वामित्व आदिका विचार ३०
१९ निद्रा और प्रचला प्रकृतिके बंध-स्वामित्व आदिका विचार ३५
२० सातावेदनीयके बंधस्वामित्व आदिका विचार ३८
२१ असातावेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बंधस्वामित्व आदिका विचार ४०
२२ मिथ्यात्व आदि सोलह प्रकृति-योंके बंधस्वामित्व आदिका विचार ४२
२३ अप्रत्याख्यानावरणीय आदि नौ प्रकृतियोंके बंधस्वामित्व आदिका विचार ४६
२४ प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बंध स्वामित्व आदिका विचार ५०
२५ पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधके बंधस्वामित्व आदिका विचार ५२
स्वामित्वका विचार १०४
४३ चतुर्थ, पंचम और छठी पृथिवीमें बंधस्वामित्व आदिका विचार १०५
४४ सातवी पृथिवीमें ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार १०५
४५ सातवी पृथिवीमें निद्रानिद्रा आदिके बंधस्वामित्वका विचार १०९
४६ सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बंधस्वामित्वका विचार १११
ʻतिर्यग्गतिमें ɹ
४७ तिर्यच, पंचेन्द्रिय तिर्यच, पंचे-द्रिय तिर्यच पर्याप्त और पंचे-द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार ११२
४८ निद्रानिद्रा आदिके बंधस्वामित्वका विचार ११९

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
४९	मिथ्यात्व आदिके बंध-स्वामित्वका विचार	१२३
५०	अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बंध-स्वामित्वका विचार	१२५
५१	देवायुके बंधस्वामित्वका विचार	१२६
५२	पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंमें ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार	१२७
	ʻमनुष्यगतिमें ɹ	
५३	मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें ओघके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा	१३०
५४	मनुष्य अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच	
	ʻइन्द्रियमार्गणा	
६९	एकेन्द्रिय, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त अपर्याप्त, विकलत्रय पर्याप्त अपर्याप्त, तथा पंचेन्द्रिय अप-र्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अप-पर्याप्तोके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा	१५८
७०	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वके विचारमें बंधक आदि विषयक तेईस-प्रश्नोंके एक-द्विसंयोगादि भंगोकी प्ररुपणा	१७०
७१	उक्त जीवोंमें निद्रानिद्रा आदिके बंधस्वामित्वका विचार	१७४
७२	निद्रा और प्रचलाके बंध-	

अपर्याप्तोंके समान बंध-
स्वामित्वकी प्ररुपणा १३४
ʻदेवगतिमें ̗
५५ देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके
बंधस्वामित्वका विचार १३७
५६ निद्रानिद्रा आदिके बंध-
स्वामित्वका विचार १४१
५७ मिथ्यात्व आदिके बंध-
स्वामित्वका विचार १४३
५८ मनुष्यायुके बंधस्वामित्वका विचार १४४
५९ तीर्थंकर प्रकृतिके बंधस्वामित्व
आदिका विचार १४५
६० भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी
देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य
देवोंके समान बंधस्वामित्व
आदिकी प्ररुपणा १४६
६१ सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंमें
सामान्य देवोंके समान
बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा १४७
६२ सनत्कुमारसे लेकर सहस्त्रार कल्प
तकके देवोंमें प्रथम पृथि-वीस्य
नारकियोंके समान बंध-
स्वामित्वकी प्ररुपणा १४८
६३ आनत कल्पसे लेकर नौ ग्रेवेयक तक पांच
ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार १४९
६४ निद्रानिद्रा आदिके बंध-स्वामित्वका विचार १५२
६५ मिथ्यात्व आदिके बंध-स्वामित्वका विचार १५३
६६ मनुष्यायुके बंधस्वामित्वका विचार १५४
६७ तीर्थंकर प्रकृतिके बंध-स्वामित्वका विचार १५४

स्वामित्वका विचार १७७
७३ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार १७७
७४ असातावेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके
बंधस्वामित्वका विचार १७८
७५ मिथ्यात्व आदिके बंधस्वामित्वका विचार १८०
७६ अप्रत्याख्यानावरणीय आदिके
बंधस्वामित्वका विचार १८२
७७ प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बंध-
स्वामित्वका विचार १८४
७८ पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधके
बंधस्वामित्वका विचार १८४
७९ संज्वलन मान और मायाके
बंधस्वामित्वका विचार १८५
८० संज्वलन लोभके बंधस्वामित्वका विचार १८५
८१ हास्य, रति, भय और जुगुप्साके
बंधस्वामित्कका विचार १८६
८२ मनुष्यायुके बंधस्वामित्वका विचार १८६
८३ देवायुके बंधस्वामित्वका विचार १८७
८४ देवगति आदिके बंधस्वामित्वका विचार १८७
८५ आहारकशरीर आर आहारक अंगोपांगके
बंधस्वामित्वका विचार १९१
८६ तीर्थंकर प्रकृतिके बंधस्वामित्वका विचार १९१
ʻकायमार्गणा
८७ पृथिवीकायिक,जलकायिक,वनस्पतिकायिक,
निगोद जीव बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त
तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
पर्याप्त अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच
अपर्याप्तोंके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा १९२

६८ अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिध्दि तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार १५५	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ
८८	तेजकायिक व वायुकायिक बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्तोंमें कुछ विशेषताके साथ पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बंध-स्वामित्वकी प्ररुपणा	१९९
	योगमार्गणा	
८९	पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी और काययोगी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके बंधस्वामित्वकी ओघके समान प्ररुपणा	२०१
९०	उक्त जीवोंमें सातावेदनीय विष-यक बंधस्वामित्वकी कुछ विशेषता	२०२
९१	औदारिककाययोगियोंमें मनुष्य-गतिके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा	२०३
९२	उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बंधस्वामित्वकी मनोयोगियोके समान प्ररुपणा	२०५
९३	औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार	२०५
	निद्रानिद्रा आदिके बंध-स्वामित्वका विचार	२०९
९५	सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार	२१२
९६	मिथ्यात्व आदिके बंधस्वामित्वका विचार	२१२
९७	देवचतुष्कके बंधस्वामित्वका विचार	२१४
९८	वैक्रियिककाययोगियोंमें देव-गतिके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा	२१५
९९	वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें देव-गतिके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा	२२२
१००	उक्त जीवोंमें तिर्यगायु और मनुष्यायुके बंधाभावकी विशेषता	२२९
१०८	निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानिक प्रकृतियोंके बंधस्वामित्वकी ओघके समान प्ररुपणा	२४५
१०९	निद्रा और प्रचलाकी ओघके समान प्ररुपणा	२४८
११०	असातावेदनीयकी ओघके समान प्ररुपणा	२४९
१११	मिथ्यात्व आदिक एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा	२४९
११२	अप्रत्याख्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररुपणा	२५१
११३	प्रत्याख्यानावरणीयको ओघके समान प्ररुपणा	२५४
११४	हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररुपणा	२५४
११५	अपगतवेदीयोंमें पांच ज्ञाना-वरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार	२६४
११६	सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार	२६५
११७	संज्वलनक्रोधके बंधस्वामित्वका विचार	२६६
११८	संज्वलन मान और मायाके बंधस्वामित्वका विचार	२६७
११९	संज्वलनलोभके बंधस्वामित्वका विचार	२६८
	कषायमार्गणा	
१२०	क्रोधकषायी जीवोंमें पांच ज्ञाना-वरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार	२६९
१२१	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा	२७२
१२२	निद्रासे लेकर प्रत्याख्यानावरण-चतुष्क तक ओघके समान प्ररुपणा	२७४
१२३	पुरुषवेदादिकी ओघके समान प्ररुपणा	२७५

१०१ आहारक व आहारकमिश्र काय-योगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार २२९

१०२ कार्मणकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार २३२

१०३ निद्रानिद्रा आदिके बंधस्वामित्वका विचार २३७

१०४ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार २३८

१०५ मिथ्यात्व आदिके बंधस्वामित्वका विचार

१०६ देवगति आदिके बंधस्वामित्वका विचार २४१

ʿवेदमार्गणप्र

१०७ स्त्री,पुरुष और नपुंसकवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार २४२

१२४ हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररुपणा २७५

१२५ मानकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार २७५

१२६ द्विस्थानिक आदि प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा २७६

१२७ हास्य रति आदिकी ओघके समान प्ररुपणा २७७

१२८ मायाकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार २७७

१२९ द्विस्थानिक आदिकी ओघके समान प्ररुपणा २७७

१३० हास्य-रति आदिकी ओघके समान प्ररुपणा २७८

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ

१३१ लोभकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार २७८

१३२ शेष प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा २७८

१३३ अकषायी जीवोंमें सातावेद-नीयके बंधस्वामित्वका विचार २७८

ʿज्ञानमार्गणप्र

१३४ मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी और विभंगज्ञानियोंमें पांच ज्ञानावर-णीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार २७९

१३५ एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा २८५

१३६ आभिनीबोधिक, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार २८६

१५३ सूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार ३०८

१५४ यथाख्यातविहारशुध्दिसंयतोंमें सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार ३०९

१५५ संयतासंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार ३१०

१५६ असंयत जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार ३१२

१५७ द्वितीयस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा ३१७

१५८ एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा ३१७

१५९ मनुष्यायु और देवायुके बंध-

१३७ निद्रा व प्रचलाकी ओघके समान प्ररुपणा २८७

१३८ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार २८८

१३९ शेष प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररुपणा २८९

१४० मन:पर्ययज्ञानियोंमें पांच ज्ञानावरणीय
आदिके बंधस्वामित्वका विचार २९५

१४१ निद्रा और प्रचलाके बंधस्वामित्वका विचार २९५

१४२ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार २९६

१४३ शेष प्रकृतियोंकी कुछ विशेषताके
साथ ओघके समान प्ररुपणा २९६

१४४ केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयके
बंधस्वामित्वका विचार २९७

ʿसंयममार्गण्र

१४५ संयत जीवोंमें, मन:पर्य-यज्ञानियोंके
समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा २९८

१४६ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वमें
कुछ विशेषता २९८

१४७ सामायिक-छेदोपस्थापनशुध्दि
संयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय
आदिके बंधस्वामित्वका विचार २९८

१४८ शेष प्रकृतियोंके बंध-स्वामित्वकी
मन:पर्ययज्ञानियों-के समान प्ररुपणा ३००

१४९ परिहारशुध्दिसंयतोमें पांच ज्ञानावरणीय
आदिके बंधस्वामित्वका विचार ३०३

१५० असातावेदनीय आदिके बंध-
स्वामित्वका विचार ३०५

१५१ देवायुके बंधस्वामित्वका विचार ३०६

१५२ आहारशरीर और आहारशरीरांगोपांगके
बंधस्वामित्व-का विचार ३०७

स्वामित्वका विचार ३१७

१६० तीर्थकर प्रकृतिके बंध-
स्वामित्वका विचार ३१८

ʿदेशमार्गण्र

१६१ चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंमें
ओघके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा ३१८

१६२ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वमें
कुछ विशेषता ३१९

१६३ अवधिदर्शनी जीवोंमें अवधि-
ज्ञानियों और केवलदर्शनी जीवोंमें.
केवलज्ञानियोंके समान
बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा ३१९

लेश्यामार्गणा

१६४ कृष्ण, नील और कापोत लेश्या-वालोंमें
असंयतोंके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा ३२०

१६५ तेज और पद्मलेश्यावालोंमें पांच
ज्ञानावरणीय आदिके बंध-
स्वामित्वका विचार ३३३

१६६ द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके
समान प्ररुपणा ३३७

१६७ असातावेदनीयकी ओघके
समान प्ररुपणा ३३९

१६८ मिथ्यात्व आदिके बंध-
स्वामित्वका विचार ३४०

१६९ अप्रत्याख्यानावरणीयकी
ओघके समान प्ररुपणा ३४१

क्रम नं. विषय पृष्ठ

क्रम नं. विषय पृष्ठ

१७० प्रत्याख्यानावरणकी ओघके समान प्ररुपणा ३४१	१९० निद्रा और प्रचलाके बंधस्वामित्वका विचार ३७४
१७१ मनुष्यायुकी ओघके समान प्ररुपणा ३४३	१९१ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार ३७५
१७२ देवायुकी ओघके समान प्ररुपणा ३४३	१९२ असातावेदनीय आदिके बंध-स्वामित्वका विचार ३७६
१७३ आहारकशरीर और आहारक-शरीरांगोपांगके बंधस्वामित्वका विचार ३४४	१९३ अप्रत्याख्यानावरणीयकी अवधिज्ञानियोंके समान प्ररुपणा ३७६
१७४ तीर्थकर प्रकृतिके बंधस्वामित्वका विचार ३४५	१९४ उक्त जीवोंके आयुके बंधका अभाव ३७७
१७५ पद्मलेश्यावालोंमें मिथ्यात्व-दण्डककी नारकियोंके समान प्ररुपणा ३६५	१९५ प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बंध स्वामित्वका विचार ३७७
१७६ शुक्ललेश्यावालोंमें तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररुपणा ३४६	१९६ पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधके बंधस्वामित्वका विचार ३७७
१७७ उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बंधस्वामित्वकी मनोयोगियोंके समान प्ररुपणा ३५६	१९७ संज्वलन मान और मायाके बंधस्वामित्वका विचार ३७८
१७८ द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी नवग्रेवेयकविमानवासी देवोंके समान प्ररुपणा ३५६	१९८ संज्वलनलोभके बंध-स्वामित्वका विचार ३७८
ˊभव्यमार्गणा	१९९ हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बंधस्वामित्वका विचार ३७९
१७९ भव्य जीवोंमें ओघके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा ३५८	२०० देवगति आदिके बंधस्वामित्वका विचार ३७९
१८० अभव्य जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार ३५९	२०१ आहारकशरीर और आहारक-शरीरांगोपांगके बंधस्वामित्व-का विचार ३८०
ˊसम्यक्त्वमार्गणा	२०२ सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी मति-ज्ञानियोंके समान प्ररुपणा ३८०
१८१ सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें आभिनिबोधिक-ज्ञानियोंके समान बंध-स्वामित्वकी प्ररुपणा ३६३	२०३ सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंकी असं-यतोंके समान प्ररुपणा ३८३
१८२ सातावेदनीयके बंधस्वामित्वमें कुछ विशेषता ३६४	२०४ मिथ्यादृष्टियोंकी अभव्य जीवोंके समान प्ररुपणा ३८६
१८३ वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें पांच ज्ञानावरणीय	२०५ संज्ञी जीवोंमें ओघके समान बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा
	२०६ सातावेदनीयके बंधस्वामित्व की चक्षुदर्शनी जीवोंके समान प्ररुपणा ३८७

आदिके बंधस्वामित्वका विचार ३६४

१८४ असातावेदनीय आदिके बंध-

स्वामित्वका विचार ३६७

१८५ अप्रत्याख्यानवरणीय आदिके बंध-

स्वामित्वका विचार ३६९

१८६ प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बंध-

स्वामित्वका विचार ३७०

१८७ देवायुके बंधस्वामित्वका विचार ३७१

१८८ आहारकशरीर और आहारक-

शरीरांगोपांगके बंधस्वामित्वका विचार ३७२

१८९ उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें पांच ज्ञानावरणीय

आदिके बंधस्वामित्वका विचार ३७२

२०७ असंज्ञी जीवोंमें अभव्योंके समान

बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा ३८७

२०८ आहारक जीवोंमें ओघके समान

बंधस्वामित्वकी प्ररुपणा ३९०

२०९ अनाहारक जीवोंमें कार्मण

काययोगियोंके समान बंध-

स्वामित्वकी प्ररुपणा ३९१